P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-II * Issue-X*June-2015

महर्षि वात्स्यायन के शैक्षिक विचारों का ग्रन्थपरक अध्ययन एवं उसकी उपादेयता

अनिल कुमार
सहायक अध्यापक,
बेसिक शिक्षा विभाग,
जनपद अलीगढ़

सारांश

प्रस्तुत शोध महर्षि वात्स्यायन के शैक्षिक विचारों का संचयन, वर्गीकरण तथा निर्वचन करना है। इसके अलावा महर्षि वात्स्यान के काम शिक्षा तथा नियोजित आदर्श परिवार सम्बन्धी विचारो का भारतीय संदर्भ में अध्ययन तााि उनकी प्रासंगिकता का पता लगाना था। इस अध्ययन के लिये अंगीकृत प्रक्रिया इस आधारभूत मान्यता पर आधारित है कि किसी भी विचारक की जीवन परिस्थितियाँ उसके तत्वमीमांसा, ज्ञान–मीमांसा तथा मूल्य–मीमांसा सम्बन्धी विचारों का निर्धारण करती हैं। अध्ययन से निम्न निष्कर्ष सामने आते हैं।

कामसूत्र, मानव जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी है। काम के व्यापक अर्थ में मानव की सम्पूर्ण कामनाएँ, साहित्य, संगीत, संगीत और कलाओं का समावेश हो जाता है। इसका शिक्षा और नियोजित आदर्श परिवार सम्बन्धी विचार आधुनिक समय में वैज्ञानिक और व्यवहारिक कसौटियों पर अक्षरशः कसे जा सकते हैं।

मुख्य शब्द : महर्षि वात्स्यायन, दर्शन और शिक्षा।

प्रस्तावना

इतिहास साक्षी है कि वैदिक एव बौद्धकाल में भारतवर्ष विश्व का गुरु था और विश्वभर के ज्ञानपिपासु विद्यार्जन के लिये वर्षों भारतवर्ष के विश्वविद्यालयों में अध्ययन किया करते थे। कालान्तर में विदेशी एवं विधर्मी आक्रान्ताओं ने भारतवर्ष पर आक्रमण किये और उसके धर्म, संस्कृति एवं विद्यामन्दिरों को विनष्ट करने का निन्दनीय प्रयास किया। जीससमत के अनुयायी अंग्रेज अन्तिम आक्रान्ता थे जिन्होंने सत्ता और शिक्षा द्वारा भारतवर्ष का आंग्लीकरण (पाश्चातीकरण) करने के लिये अथक प्रयास किया। लार्ड मैकाले ने योजनाबद्ध रूप से 1835 में ब्रिटिशकालीन शिक्षा की नीति का निर्धारण किया और फिर वुड ने उस नीति पर आधारित शिक्षाप्रणाली का वैदिककाल से चली आ रही शिक्षाप्रणाली के स्थान पर प्रत्यारोपण किया। वही विदेशी, अभारतीय शिक्षाप्रणाली थोड़े–बहुत हेरफेर के साथ स्वतन्त्र भारत में यथावत् चालू है जिसके कारण शिक्षा द्वारा स्वतन्त्र भारत की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुरूप राष्ट्रनिर्माताों का निर्माण नहीं होपारहा है। महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, भारतीय शिक्षाविद् और राष्ट्रीय शिक्षा आयोग सबकी मान्यता है कि भारत में प्रचलित अभारतीय शिक्षाप्रणाली का भारतीयकरण कियेबिना भारत का अभ्युदय सम्भव नहीं। शिक्षाप्रणाली के भारतीयकरण का तात्पर्य है, भारतीय शिक्षा और उसके समस्त पक्षों को युगानुरूप भारतीय जीवनमूल्यों पर आधारित करना और आवश्यकतानुसार बाह्य जीवनमूल्यों के प्रवेश के लिये द्वार खुले रखना। भारतीय वांगमय भारतीय जीवनमूल्यों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत है और वेदों के उपरान्त महर्षि वात्स्यायन ग्रन्थ मूल्यों का महासागर है। महर्षि वात्स्यायन ग्रन्थ (कामसूत्र) सिर्फ एक कामशास्त्र ही नहीं अपितु दर्शन एवं शिक्षा का अद्वितीय स्रोत भी है। प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य प्रचलित शिक्षाप्रणाली के भारतीयकरण की दृष्टि से महर्षि वात्स्यायन के ग्रन्थ में उल्लिखित जीवनमूल्यों और उनपर आधारित शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना है।

आधारभूत मान्यता

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पना, उद्देश्य, प्रक्रिया इस मार्गदर्शक सिद्धान्त पर आधारित है कि ''दर्शन और शिक्षा एकही सिक्के के दो पक्ष हैं जिनमें से दर्शन सिक्के का विचारात्मक पक्ष है और शिक्षा क्रियात्मक पक्ष। दर्शन और शिक्षा के इसी स्वाभाविक सम्बन्ध के कारण प्रत्येक व्यक्ति युगपत् दार्शनिक भी होता है और शिक्षक भी। किसी भी विचारक की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ उसके जीवनदर्शन अर्थात् उसके तत्वमीमांसात्मक, ज्ञानमीमांसात्मक एवं मूल्यमीमांसात्मक विचारों का निर्धारण करती हैं और फिर, उसके दार्शनिक विचार उसके शिक्षादर्शन अर्थात् शिक्षा की प्रकृति, कार्य,

उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षणविधि, गुरु शिष्य सम्बन्ध आदि से सम्बन्धित उसके विचारों को एक निश्चित रूप प्रदान करते हैं।''

अध्ययन की परिकल्पना

दार्शनिक अनुसन्धान के महान प्रतिपादकों ने शोधकर्ताओं को परामर्श दिया है कि वे एक दार्शनिक अन्वेषण का उत्तरदायित्व लेते समय परिकल्पना या परिकल्पनाओं के पीछे न पड़े। तथापि, औपचारिकता के लिये अनुसन्धाता अपनी परिकल्पना निम्न प्रकार प्रस्तावित करता है :

''यह परिकल्पना की जाती है कि महर्षि वात्स्यायन के अधिकांश दार्शनिक, शैक्षिक, नियोजित, आदर्श परिवार एवं संयमित कामशिक्षा–सम्बन्धी विचार स्वतन्त्र भारत के लिये ओत–प्रोत पंथनिरपेक्ष, समाजवादी एवं लोकतन्त्रात्मक सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से पूर्णतया प्रासंगिक हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. महर्षि वात्स्यायन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय देना।
2. वात्स्यायन के काम सम्बन्धी विचारों का संचयन, वर्गीकरण एवं निर्वचन करना।
3. महर्षि वात्स्यायन के कामशिक्षा एव नियोजित आदर्श परिवार सम्बन्धी विचारों का विवेचन करना।
4. भारत की विद्यमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में कामशिक्षा को विद्यालय पाठ्यक्रम का एक विषय बनाने की दृष्टि से कुछ व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन महर्षि वात्स्यायन के विश्वविख्यात ग्रन्थ कामसूत्र पर आधारित है। कामसूत्र की विषयवस्तु अधिकरणों में विभक्त है : (1) प्रत्येक अधिकरण में अनेक अध्याय एवं प्रकरण सम्मिलित हैं। प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः कामवर्ग के स्वरूप और कामशिक्षा के आयोजन तक सीमित है।

अध्ययन की प्रक्रिया

जैसा कि पहले स्पष्ट कियागया, इस अध्ययन के लिये अंगीकृत प्रक्रिया इस आधारभूत मान्यता पर आधारित है कि किसी भी विचारक की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थितियाँ उसके अत्यावश्यक विश्वासों अर्थात् उसके तत्वमीमांसात्मक, ज्ञानमीमांसात्मक एवं मूल्यमीमांसात्मक विचारों का निर्धारण करती हैं, और फिर उसक अत्यावश्यक विचार उसके शैक्षिक विचारों अर्थात् उसके शिक्षादर्शन का निर्धारण करते हैं। यह सिद्धान्त महर्षि वात्स्यायन पर भी लागू होता हैं इस आधारभूत मान्यता के आधार पर प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित सोपानों को अनिवार्य बना देता है :

1. महर्षि वात्स्यायन की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक परिस्थितियों की पहचान।
2. उनके विशेषतः काम–सम्बन्धी दार्शनिक विचारों का संचयन, वर्गीकरण एवं निर्वचन।
3. उनके विशेषतः कामशिक्षा–सम्बन्धी, शैक्षिक विचारों का संचयन, वर्गीकरण एवं निर्वचन।
4. उनके विचारों के विवेचन के प्रकाश में विद्यालय–स्तर पर पाठ्यक्रम में कामशिक्षा विषय सम्मिलित करने के लिये कुछ व्यावहारिक सुझाव देना।
5. नियोजित आदर्श परिवार की स्थापना की दृष्टि से उनके कामशिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्तों का अध्ययन।

शोधकर्ता अपने अध्ययन की प्रक्रिया में इन सब सोपानों का अनुसरण करेगा।

निष्कर्ष

1. प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर शोधकर्ता का सर्वप्रथम एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि महर्षि वात्स्यायन का ग्रन्थ (कामसूत्र) कोई सामान्य पाठ्यपुस्तक या दार्शनिक ग्रन्थ नहीं है अपितु एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और पवित्र ग्रन्थ है। काम एक पुरुषार्थ है और इस ग्रन्थ (कामसूत्र) में इसी कामपुरुषार्थ की बड़ी व्यापक और व्यवहारिक व्याख्या की गई है। भारतीय संस्कृति में काम केवल स्त्री–पुरुष सम्बन्ध तक ही सीमित नहीं है। काम के व्यापक अर्थ में मानव की सम्पूर्ण कामनायें, साहित्य, संगीत और कलाओं का समावेश हो जाता है। कितने ही अज्ञानी या अल्पज्ञानी मनुष्य 'कामसूत्र' का नाम सुनते ही नाक भौं सिकोड़ने लगते हैं और लज्जा का अनुभव करने लगते हैं मानो वह कोई बड़ा ही अश्लील या निन्दनीय ग्रन्थ हो। वास्तव में धर्म, अर्थ, और काम तीनों ही एक दूसरे से इस प्रकार जुड़े हैं कि उन्हें पृथक किया जाना संभव नहीं है। काम का साम्राज्य सम्पूर्ण संसार में विस्तृत है। जड़ हो या चेतन संसार का एक भी पदार्थ ऐसा नहीं है जो काम के साम्राज्य का अंग न हो। धर्म और अर्थ इन दो पुरुषार्थों का उपागम तो केवल मनुष्य ही करते हैं परन्तु काम का उपार्जन पशु, पक्षी एवं कीट भी करते दिखाई पड़ते हैं जहाँ इच्छा है वहीं काम है। महर्षि वात्स्यायन ने इच्छा और काम को एक ही पदार्थ के दो पक्षों के रूप में माना है। ऋग्वेद में कहा गया है कि परमेश्वर ने अनेक होने की इच्छा से काम का उदार भाव किया और सृष्टि की रचना की। इससे स्पष्ट है कि काम ही सृष्टि का बीज है। जब परमेश्वर और काम के सम्बन्ध का यह स्वरूप है तब सृष्टि में ऐसा कौन हो सकता है जो काम की इच्छा से मुक्त हो। अतः अनुसन्धाता इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि जीवन में सफलता के आकांक्षी प्रत्येक मनुष्य को वात्स्यायन के ग्रन्थ (कामसूत्र) का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।
2. प्रस्तुत शोध में कामसूत्र का परिचय इतिहास, उसकी उत्पत्ति, स्वरूप, महत्त्व एवं गुरू परम्परा पर प्रकाश डाला गया है।

a. महर्षि वात्स्यायन का कामसूत्र प्रजापति द्वारा रचित ''त्रिवर्ग'' के कामशास्त्र पर आधारित है। त्रिवर्ग में कामशास्त्र के अतिरिक्त धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र भी सम्मिलित है।
b. कालान्तर में महर्षि मनु ने धर्मशास्त्र को, महर्षि बृहस्पति ने अर्थशास्त्र को, और महर्षि नन्दीकेश्वर ने कामशास्त्र को प्रजापति के त्रिवर्ग शास्त्र से अलग

कर दिया इस प्रकार कामशास्त्र के प्रथम रचियता महर्षि नन्दी थे।

c. कामशास्त्र की गुरू परम्परा में प्रजापति के अतिरिक्त महर्षि श्वेतकेत, महर्षि पाँचाल, महर्षि वात्स्यायन, दत्तकाचार्य, सुवर्णनाभ, गोनर्दीय, कुचुमार आदि हैं।

d. महर्षि वात्स्यायन के मतानुसार कामशास्त्र का महत्व धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र के समान ही है। इसके तीन कारण हैं – 1. अर्थ और धर्म की तरह काम भी एक पुरुषार्थ है। 2. अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्र की तरह कामशास्त्र का आधार भी वेद ही है। 3. कामसूत्र की महत्ता एवं पवित्रता के कारण ही अनेक महात्माओं ने कामशास्त्र का अध्ययन एवं सम्पादन किया है।

e. महर्षि वात्स्यायन द्वारा रचित कामसूत्र (7) अधिकरणों (36) अध्यायों एवं (56) प्रकरणों में विभक्त है।

3. प्रस्तत शोध में महर्षि वात्स्यायन के दार्शनिक विचारों का विवेचन किया गया है।

a. महर्षि वात्स्यायन द्वारा लिखित ग्रन्थ (कामसूत्र) त्रिवर्ग सम्बन्धी विचारों या मूल्यों का ग्रन्थ है।

b. सांसारिक सुख ही मानव जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य है जो धर्म, अर्थ और काम अर्थात त्रिवर्ग के अनुष्ठान अर्थात् प्राप्ति, अवबोध अर्थात त्रिवर्ग के ज्ञान और सम्प्रतिपत्ति त्रिवर्ग के अधिकार पर निर्भर करता है।

c. धर्म, अर्थ और काम की दृष्टि से वात्स्यायन ने मनुष्य की शतवर्षीय आयु को तीन भागों में बाँटा है। बाल्यवस्था 0 वर्ष से 16 वर्ष तक, 2. यौवनावस्था 16 वर्ष से 70 वर्ष तक, 3. और वृद्धावस्था 70 वर्ष से 100 वर्ष तक कामशास्त्र के विभाजन की उल्लेखनीय विशेषता यही है कि वह पुरुषों एवं स्त्रियों के विभाजन पर अलग–अलग विचार करता है, यह विभाजन निम्नलिखित सारणियों में प्रदर्शित किया गया है।

पुरुष की अवस्थाएँ

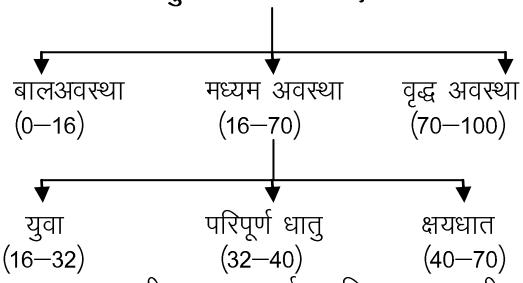

पुरुष जीवन का उपर्युक्त विभाजन उसकी आयु को 100 वर्ष का मानकर किया गया है। सारणी से स्पष्ट होता है कि पुरुष जीवन तीन भागों में विभक्त है।

मध्य अवस्था को पुनः तीन भागों में विभक्त किया गया है–1. युवावस्था (16–32), 2. तरूणावस्था (32–40) इस अवस्था में धातु का पूर्ण विकास होता है। 3. प्रौढ़ावस्था (40–70) इस अवस्था में धातु का क्षय होने लगता है।

स्त्री की अवस्थाएँ

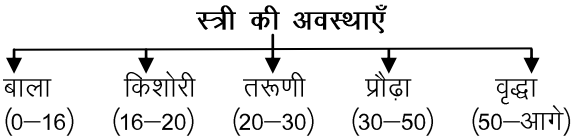

काम की दृष्टि से स्त्री जीवन की पाँच अवस्थायें प्रदर्शित की गयी हैं किन्तु महर्षि वात्स्यायन स्त्री जीवन को कुछ अन्तर से चार भागों में विभक्त करते हैं।

बाला	तरूणी	प्रौढ़ा	वृद्धा
(0–16)	(20–30)	(30–50)	(50–आगे)

इस विभाजन में (16–20) वर्ष के कालखण्ड का कोई विवरण नहीं दिया गया है। सम्भवतः यह किशोरावस्था का ही कालखण्ड था। यदि यह सत्य है तो फिर दोनों सारणियों में संगत आ जाती है और कोई भेद नहीं रह जाता है।

4. प्रस्तुत शोध में महर्षि वात्स्यायन के शैक्षिक विचारों का विवेचन किया गया है।

a. शिक्षा का एकमात्र सर्वोपरि उद्देश्य मनुष्य को आदर्श–नागरिक बनाना है।

b. महर्षि वात्स्यायन के अनुसार बाल्यावस्था में विद्या ग्रहण तथा अन्य अर्थों का अर्जन करना चाहिए। काम का सेवन युवावस्था में करना चाहिए, धर्म और मोक्ष का सेवन वृद्धावस्था में करना चाहिए तथा विद्याग्रहण के लिए ब्रह्मचर्य का ही पालन करना चाहिए।

c. महर्षि वात्स्यायन ने पुरुष एवम् स्त्रियों दोनों के लिए अलग–अलग अध्ययनकाल निर्धारित किये हैं।

d. महर्षि वात्स्यायन ने पुरुषों को कामशास्त्र की शिक्षा लेने के लिए स्वतन्त्रता प्रदान की है कि वे किसी भी योग्य आचार्य से कामशास्त्र की शिक्षा ले सकते हैं। किन्तु उन्होंने स्त्रियों को कामशास्त्र की शिक्षा लेने के लिए (छः) विश्वसनीय आचार्यों के नाम बताये हैं।

1. धाय की पुत्री	2. सच्ची सखी
3. समव्यस्क मौसी	4. वयोवृद्ध दासी
5. प्यारी भिक्षुकी	6. बहिन

5. कामसूत्र के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत महर्षि वात्स्यायन धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र और कामशास्त्र तीनों के अध्ययन को आवश्यक बताते हैं। कामशास्त्र के अन्तर्गत 64 मूल कलाओं में इनकी 518 अन्तर कलाओं का भी समावेश हो जाता है।

1.मूलकलाएँ– 64

64 मूलकलाएँ चार भागों में विभक्त हैं –

a. कर्माश्रय मूलकलाएँ (24)
b. द्यूताश्रय कलाएँ (20)
c. शंयनोपचारिका कलाएँ (16)
d. उत्तर कला (4)

a. कर्माश्रय कलाएँ – 24

1 गाना
2 बजाना
3 नाचना
4 देश देश की भाषाएँ जानना
5 उदार वचन बोलना
6 सुन्दर चित्र बनाना
7 अक्षर आदि बनाना
8 फूलों के गुलदस्ते बनाना
9 फूलों के गजरे बनाना
10 स्वादिष्ट भोजन बनाना
11 रत्नों का असली नकली पहचानना
12 उत्तम सीना

13 रंगों का बनाना और रंगना
14 जितनी रसोई बनानी हो उतना ही उचित परिणाम में इकठ्ठा करना
15 मना करने की रीति
16 अपने निर्वाह या संचय करने की विद्या
17 पशु पक्षी आदि का इलाज
18 दूसरे के किए कपट को जानना
19 खेलने की होशियारी
20 हर इंसान की पहिचान तथा उसके साथ का बर्ताव जानना
21 हर एक बात की समझदारी
22 चरणादिक दाबने की रीति
23 देह का स्वच्छ रखना
24 बाल गूँथना

b. द्यूताश्रय कलाएँ – 20

1 तीन पासों के खेल को रीति से खेलना
2 पासे डालने की रीति
3 होड़ बदलकर मूड करना
4 गोटों के चलने का मार्ग
5 होड़ के अनुकूल होने पर पति के पास से द्रव्य निकालना
6 हार जीव का वह न्याय जो दोनों मान लें
7 होड़ में हठराये द्रव्य लेना
8 अनेकों खेलों को जानना
9 मुठ्ठी में पैसे रखकर पूँछना बताना
10 जल्दी ले लेना
11 जीते हुए का हिसाब जानना
12 बराबर लेना देना
13 कपट से भुला देना
14 ग्रहण किये का देना
15 तीतुर, मेढ़ों आदि को लड़ने के लिए खड़ा करना
16 उन्हें लड़ाना
17 बुलाना
18 उड़ाना
19 नचाना
20 खेल के समय आगे दाव चलाने की क्रिया

c. शयनोपचारिका कलाएँ–16

1 दूसरों के भाव को जान लेना
2 प्रसन्न करना
3 क्रमशः अपने अंगों का देना
4 नखच्छेद और दन्तच्छेद की विधि
5 नाड़े का खोलना
6 गुदाङ्गक विधि से सीधा छुआना
7 रमण की चतुराई
8 दूसरे पर अपने राग को प्रकट करना
9 बराबर तृप्ति कर लेना
10 रमण के लिए उत्साहित करना
11 थोड़े गुस्से में करके कार्य में लगाना
12 क्रोध का अच्छी तरह निवारण करना
13 कुपित को प्रसन्न कर लेना
14 सोते हुए का परित्याग
15 आखिर के सोने की विधि
16 गुप्त अंगों का छिपाना

d. उत्तर कलाएँ–4

1 दुखित हृदय के आँसुओं का टपका कर कहना कि ऐसी मुझे इस दशा में छोड़ अन्यन्त्र जाने में कल्याण न होगा
2 जाते हुए को अपनी कसमें दिलाकर रोकना
3 फिर भी न रूके तो पीछे पीछे जाना
4 न हाथ आने पर उसे बार बार देखना

5. प्रस्तुत शोध में महर्षि वात्स्यायन और उनके नियोजित आदर्श परिवार सम्बन्धी विचारों का विवेचन किया गया है।

1. वात्स्यायन ने आदर्श नागरिक को तीन भागों में विभक्त किया है –

(क) नागर या नागरिक, (ख) उपनागर, (ग) ग्रामीण नागर या (नागरिक)

2. वात्स्यायन ने नागरों से सम्बन्धित चार पक्षों का विवेचन किया है –

(क) नागर तथा नागर–निवास, (ख) नागर–नित्यकर्म,
(ग) नागर–नैमित्तिककर्म, (घ) उपनागर या नागर–सहचर

3. महर्षि वात्स्यायन ने स्त्री पुरुष के विवाह संस्कार से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण पक्षों का बड़ा ही रोचक वर्णन किया है।

(क) महर्षि वात्स्यायन के अनुसार कन्या कुटुम्ब, रक्षक कुलाचार, अनुराग, रूप, शील, लक्षण और आरोग्य इन आठ बातों से देखी जाती है।

4. वरणीय कन्या अपने से 3 वर्ष से लेकर 8 वर्ष तक छोटी, कुलीन माँ बाप वाली, अच्छे संस्कार वाली, रूप, शील और शुभलक्षणयुक्त, पूर्णरूप से स्वस्थ, आदि गुणों से युक्त हो, ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए।

5. अवरणीय कन्या – महर्षि वात्स्यायन के अनुसार जिस परिवार या कन्या में ये लक्षण पाये जायें, उस कन्या से विवाह नहीं करना चाहिए। जिस कुल में संस्कार न होते हों, जिसमें कन्या ही कन्या पैदा होती हों, जिस घराने में वेद की शिक्षा व धार्मिक शिक्षा न हो जिस घर की लड़कियाँ बड़े बालों वाली हों, जिस कन्या में बवासीर, क्षयरोग, मृगी आदि की बीमारी हो, जिस घर में कुष्ठियों आदि की पैदाश हो।

6. महर्षि वात्स्यायन के अनुसार विवाह के आठ भेद होते हैं – 1. ब्राह्म विवाह, 2. प्रजापत्य विवाह, 3. आर्ष विवाह, 4. दैव विवाह, 5. गान्धर्व विवाह, 6. राक्षस विवाह, 7. पैशाच विवाह, 8. अधम विवाह। इन सभी विवाहों में गान्धर्व विवाह श्रेष्ठ है।

संदर्भ

1. पण्डित माधवाचार्य : कामसूत्रम् (भाग–2), खेमराज श्री कृष्णदास प्रका"ान, बम्बई–4, 1999
2. डॉ0 रामचन्द्र वर्मा"ास्त्री : कामसूत्र, मनोज पब्लिके"ान, चाँदनी चौक, दिल्ली–6, 2008
3. जे0के0 वर्मा : कामसूत्र, राजा पॉकेट बुक्स, बुराड़ी, दिल्ली–84, 2007
4. उपेन्द्र वर्मा : कामसूत्र, एसोसिएटेड प्रैस, सिण्डीकेट

5. राज्य माध्यमिक ि"क्षकों की कार्य–पुस्तिका : विद्यालय एड्स ि"क्षा कार्यक्रम, यूनिसेफ, यूनिसेफ भवन 73, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली
6. जीवन के लिए ि"क्षा, ि"क्षकों तथा विद्यार्थियों हेतु पारिवारिक स्वास्थ्य एवं जीवन–कलाओं की ि"क्षा का गाइड, उ0प्र0 शासन
7. जटायु : रेड एर्लट, विनियोग परिवार, बोरीवली (वेस्ट), मुम्बई–40092
8. वि"वविद्यालय ि"क्षा आयोग (1948–49), ि"क्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
9. ि"क्षा आयोग की रिपोर्ट, ि"क्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
10. S.V.C. Arya : The Fourth Indian Year Book of Education, New Delhi, Jan. 1972.
11. Research in Education, Best J.W., New Delhi
12. Educational Ideas and Institutions in Ancient India : Janki Prakashan, Patna, 1979.
13. Encyclopedia X. Xarris, Chistrew : Encyclopedia of Educational Research, New York, The Macmillan Company, Third Edition, 1960.